अविनाशी रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ के कर्णधार ''पिता श्री प्रजापिता ब्रह्मा''

ब्रह्माकुमार राम लखन,

बात आज की नहीं, १३६ साल पुरानी है। उस समय का भारत, पाँच सौ राजाओं की जागीर बनकर रह गया था। लोग, जर—जोरू जमीन के लिये लड़ा ही करते थे। अंग्रेज.....कभी सूरज नहीं डूबता था जिनके राज्य में, ''फूट डालो और शासन करो'' की कुनीति से सारे भारत पर आधिपत्य जमाये बैठे थे। पड़ोसी मुस्लिमों की भी कपट नीति के कारण, सोने की चिड़िया कही जाने वाली माँ भारती, अपनी ही दुर्दशा पर आँसू बहा रही थी। विदेशियों के वर्चस्व के कारण माताओं—बहनों पर इतना दबाव था कि घूँघट से एक ही आँख खोल कर चला करती थी। अपहरण—बलात्कार, दास—दासी, दहेज—सती प्रथा और

विधवापन जैसे कलंक पीछा करते ही रहते थे। कोई लाखों में से एक ही पढ़ लिख पाती थी।

देख तेरे इन्सान की हालत, क्या हो गयी भगवान.....कितना बदल.....?

लुटेरे विदेशी, यहाँ की बहुमूल्य धरोहरों को अपने देश ले जाने में ही जुटे रहते थे। कुव्यवस्था के कारण भुखमरी—बेरोजगारी और प्राकृतिक महामारियों का साम्राज्य छाया रहता था। जादू—मंत्र, कंठीमाला—कर्मकाण्ड, भभूति और गुरू गोसाई जैसे लोगों के कारण ही ज्यादातर मौतें हुआ करती थीं। पुरोहितों का इतना बोलबाला था कि उन्हें लोग दण्डवत—प्रणाम करके ही गुजरते व खाते—पीते थे। जैसे कि सारे भारतीय त्राहिमान—त्राहिमान कर रहे हो।

विज्ञान का शैशवकाल होने के कारण उस समय अनुसंधानों की धूम मची थी। प्रकृति को अधीन करता पुरूष ऐसे शोध—अविष्कार करता जा रहा था जो भारत के लिये जादू—मंत्रों से भी बड़ा करिश्मा था। यहाँ की गलत मान्यताओं और रस्म रिवाजों की विज्ञान पोल खोलने लगा था। आध्यात्मिक विचारणा भी वैज्ञानिक आधारों पर शुरू होने लगी। अनुसंधानों की ऐसी बाढ़ आ गयी कि निर्माण के साथ विरोधियों के लिये भीषण विस्फोटक हथियार भी बनने लगे। हिटलर—मुसोलिनी जैसे लाखों—करोड़ों को निगल जाने वाले आदमखोर पैदा हो रहे थें। बचपन में ही मानवता की घोर विषमता और धर्म, जाति, देश, भाषा का मूल्यहीन गोरखधन्धा उन्हें देखने को मिला। ऐसी विकराल घड़ी में बालक लेखराज का जन्म सन् १८७६ में एक साधारण हेड मास्टर जी के घर में हुआ। कृपलानी परिवार में उनकी बालपन की दक्षता को देख, लोग कहा करते *''होनहार विरवान के, होत है चिकने पात।''* सिन्ध—हैदराबाद में विविध प्रकार से समय की मार रखते हुये किशोरवय से ही अनुभवी बनने लगे। शैशव काल में माँ और कुछ ही वर्षों बाद पिता की भी छाया उठ़ गयी। सगे—संबंधी संभालते हुये एक छोटी सी गल्ले की दुकान पर लगा दिये। सुसंस्कारित जीवन के कारण बचपन से गीता पाठ और संध्या बन्दन के बाद ही भोजन करके धन्धे पर जाते थे।

भारत की भूमि पर, एक दिव्य पुरूष ने जन्म लिया, नव युग का निर्माण कराने शिव ने उनमें प्रवेश किया.....

रहम दिल स्वभाव के कारण, गरीब ग्राहकों को ज्यादा तौल देने से, उन्हें गल्ले की दुकान से भी निकाल दिया गया। लौकिक मौसी जी साज—सम्भाल करती रहीं। वैराग्य वृत्ति जन्मजात होने कारण लौकिकता उन्हें पसन्द ही नहीं थी। संग सोहबत के कारण स्वप्नसुन्दरी नामक चलचित्र को देखे । उनकी मनोवृत्ति बदलती हुई पहचान मौसी जी ने एक सुशील—सुलक्षिणी, यशोदा नामक युवती से उनकी शादी कर दी। इस पर भी उनकी लगन गृहस्थ से अधिक भक्ति—वैराग्य में थी। पर विवाह के बाद ही जीवन ने अनोखी अंगड़ाई ली। सिन्ध के दानी—महादानियों में प्रख्यात, काका मूलचन्द्र जी ने उन्हें अपने हीरे—जवाहरात के व्यापार हेतु कोलकता बुला लिया। थोड़े ही वर्षों में अपनी अचूक परखशक्ति और व्यापार—व्यवहार कुशलता के बल पर वे प्रसिद्ध जौहरी बन गये। जबाहरात मार्केट में उनसे ही राय—सलाह लेकर व्यापार—धन्धा करने के कारण, उस मार्केट का नाम उनके ही नाम पर ''लखीराज मार्केट'' पड़ गया। धीरे—धीरे राजा—रानी व राजकुमार—राजकुमारियों के लिये वे मनमोहक आभूषण तैयार करने लगे। उनके रूहानियत वाले व्यक्तित्व तथा दिव्य आकृति—प्रकृति व सहदयता के कारण सभी लोग उनसे अलौकिक अपनत्व का अनुभव करते थे।

उनका सौम्य व्यक्तित्व, महिलाओं के प्रति विन्रम सम्मान, नियम, धारणा, भक्ति—पूजा के प्रति

अटूट विश्वास हर किसी पर अमिट छाप छोड़ जाता था। उनके निराले—प्यारे शाही अंदाज को देख राजा लोग कहा करते ''लखीरात बाबू'' भगवान से भूल हो गयी जो आप को राजघराने में पैदा नहीं किया। आप तो सम्पूर्ण राजकुलोचित संस्कारों से अलंकृत हैं। रानियों व बहू—वेटियों को आभूषण दिखाने के लिये वे उन्हें समाद्रित अतिथि की तरह राणिवास में भी ले जाया करते थे। कश्मीर, उदयपुर और काठमाण्डू जैसे महाराजे तो उन्हें विशेष अतिथि की तरह आंमत्रित भी किया करते थे। राजकीय सम्मान के साथ भोज आदि में उन्हें विशिष्ट सत्कार दिया जाता था। अपने यहाँ भी वे राजाओं, महाराजाओं को भी सात्विक प्रीतिभोज पर बुलाया करते थे। संबंध—व्यापार—परिवार में अविचल लगन रखते हुये भी दादा की भक्तिभावना अनूठी रूप धारण करती गयी। परमपिता परमात्मा की सत्य पहचान जानने तथा उन्हें पानें की उनमे उत्कृष्ट इच्छा समायी हुई थी। इसी खोज—बीन में उन्होंने
बारह गुरू बदल दिये। मंदिरों—तीर्थों के पण्डे—पुजारियों को स्वर्ण असरफियाँ देकर, वे मूर्तियों और कर्मकाण्डों की आन्तरिक जानकारियाँ लिया करते थे। इतना सब कुछ करते उन्हें हर जगह छलावा के अलावा कोई खास उच्चता नहीं मिली। फिर भी ध्यान—धारणा को श्रद्धापूर्वक निभाते हुये उनका खोजी दिमाग कुछ और ही ढूंढता रहा।

अन्तर्दिल से परमात्मा को पुकारते हुये बाबा के किसी और ही लोक में खोये नयन, छ:फुट ऊँची—मजबूत देह यष्टि, उन्नत मस्तक, लम्बी ग्रीवा, हंसों जैसी मस्त—चाल दूर से ही लोगों को खींचती थी। परिवार उनका इतना अनुकूल व समर्पण

भाव वाला था कि हर कदम पर साथ निभाने के लिये सदा ही खड़ा रहता था। सब कुछ होते हुये भी कुछ और ही जानने और पाने की उनकी उत्कन्ठा हर दिन बढ़ती ही जा रही थी। पूजा के समय मुम्बई के बबुलनाथ मन्दिर वाले उनके गुरू का बुलावा आ गया। पूजा—पाठ विधि—विधान छोड़ गुरू की आज्ञा प्रमाण तुरन्त पहुँच गये मुम्बई। ध्यान के समय अपने मकान पर वहाँ ज्योर्तिमय बिन्दु, पर ज्ञान—गुणों के सिन्धु निराकार शिव का दिव्य साक्षात्कार होने लगा। कहीं दूसरे ही लोक से अलौकिक आवाज आकर उनके मुख कमल से उतरने लगी.....

''अहम्, विष्णु चतुर्भुजम्—तत्त्वम्।'' अर्थात मैं विष्णु चतुर्भज हूँ — और वही तुम हो।

तो सोचे कि गुरू की कृपा से ही सब कुछ हो रहा होगा। पर गुरू ने अपनी पूर्ण अनभिज्ञता बताते हुये उनसे कुछ
धन सम्पत्ति देने की बात शुरु कर दी तो समझ गये कि यह कोई और ही करवा रहा है। आकाशवाणी जैसी दिव्य आवाज को सुन, वे संसारिक सुध—बुध भूल किसी और ही अनजानी दुनिया में जैसे कि खो गये। अन्तरात्मा इतनी प्रफुल्लित—तृप्त हो गई कि जिगर से कहने लगे— *''पाना था सो पा लिया, अब काम क्या बाकी रहा?''* शरीर छोड़ते हुये काका मूलचन्द जी की निकलती हुई आत्मा का इस तरह की ईश्वरीय अनुभूतियों से उनका सब कुछ ही बदल गया। उसी अलौकिक, न्यारी—प्यारी छवि और आवाज में विह्वल हो सोचने लगे। जैसे कि किसी और ही लोक में खो गये हों। काका मूलचन्द द्वारा बताया दान का सदाव्रत चलते ही रहे। बात विशेष सन् १९३६ की है। अनेकानेक उतार चढ़ाओं से गुजरती हुई उम्र साठ को पार करने ही वाली थी। कुछ विश्राम के ढ़ंग से काशीवास हेतु अपने अभिन्न मित्र के पास गये। बनारस में मोतीझील के पास उनके सुन्दर बंगले में जाकर रूके। उनके पूजा—वन्दन, ज्ञान—ध्यान, मनन—चिन्तन की लगन वहाँ पहुँचकर और ही तीव्रतर हो गई। अमृतवेले—प्रात:, घर के पास वाले पीपल के पेड़ के नीचे संगमरमर की छोटी चौकी पर बैठे ध्यान मग्न थे। शिव भोले भण्डारी ने उनकी अविचल भक्ति देख, उनके जन्म—जन्म की आस, प्यास बुझाने हेतु रहमत बरसानी शुरू कर दी। एक दिव्य अलौकिक प्रकाश से उनके चारों ही ओर उजास फैल गया। वे अपने सुध—बुध भूल किसी और ही लोक में विचरण करते हुये, इस धरा के बन्धन—भार से जैसे कि कहीं दूर चले गये। कुछ पलों तक शिव के लगन में मगन होते ही उन्हें सृष्टि के महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ना चित्त, न ही मन में था कि अनोखे दृश्य दिखने लगे। आग्नेयात्रों और वरूणास्त्रों से सारे संसार में विध्वंस दिखाई देने लगा। हाहाकार मचाती सम्पूर्ण मानवता गृहयुद्धों के कारण शरण चाहने के लिये यहाँ—वहाँ भागम—भाग करते दिख रही थी। कहीं आग, कहीं तूफान तो कहीं वाढ़—सूखा का साम्राज्य छाया हुआ था। सारी दुनियाँ ही दहलती दिखाई देने लगी। लूटमार, आगजनी—भ्रष्टाचार के कारण कहीं कोई भी अपना.....नहीं दिख रहा था। सर्वत्र त्राहिमाम—२ बचाओ—बचाओ की आवाजें गूँजती सुनाई पड़ने लगी। नेत्र वन्द हो गये। मुख से आवाज फूट पड़ी। अब

नहीं, वस करो। अब नहीं दिखाओ भगवन्! अब और नहीं दिखाओ.....। बहुत हो गया। अब और सहन नहीं होता। नेत्र खुलते ही ऊपर नीचे चारों तरफ देखने लगे यह क्या हुआ ??? कुछ ही समय बाद फिर आकाश से उतरते हुये झिलमिल सितारे धरती पर आते ही उन्हें सुन्दर राजकुमार—राजकुमारी रूप धारण करके दिखने लगे । अब फिर वैसी ही आवाज आई.....*''तुम्हें ऐसी स्वर्णिम दुनियाँ बनानी है''* चेतना जागी तो कहने लगे वह कौन था? क्या कहना चाह रहा था? उस समय (प्रथम विश्वयुद्ध के बाद द्वितीय विश्वयुद्ध के ताने—वाने विकराल रूप से बुने जा रहे थे। विध्वंसक तैयारियों के समाचार, संचार माध्यमों में छाये ही रहते थे। ऐसे अद्भुत साक्षात्कारों से सारी वसुन्धरा उनके नयनों के सामने घूमने लगी। ऐसे—ऐसे विचित्र विस्फोटक दिखाई दिये, जो न कभी देखे, न ही सुने गये थे। अब जैसे परमाणु बमों के अनुसंधान उस समय तक हुये ही नहीं थे।) लोगों की विकट दुर्दशा देख उनका नेक हृदय काँप उठा। देखी हुई स्मृतियों में निमग्न हो विचारसागर मंथन करते रहे।

''शिव से लगन अब लागी रे ! सोई आत्मा जागी रे ! जागी रे, शिव ..... !

कुछ समय पश्चात् जब चेतना शीतल—एकाग्र हुई तो गहरी सोच में पड़ गये। अरे ! यह क्या देखा ? अर्न्तदिल में भरी ईश्वरीय खुमारी उनके अंग—अंग से विभासित हो रही थी। नयन—नयन—वयन कहीं और ही खोये हुये रहते थे। इतना परिपूर्ण से बन गये, जो शब्दों में आने का दिल ही नहीं हो रहा था। ध्यान—माल—संबंध आदि से जैसे कि रग ही निकल गई। यहाँ—वहाँ, जहाँ—तहाँ, जमीन, दीवारों व कागजों पर वही बातें उकेरने लगे। प्रभु के दीवाने बन रूहानी प्राप्तियों में इतने मस्त रहने लगे कि कहा करते थे कि — *''खजाना बहुत है, पा रहा हूँ—चाबी मिल गई — पा रहा हूँ।''* ऐसी—ऐसी अनेकों बातें पत्रों में लिखकर घर भेजने लगे थे। बनारस से थोड़े दिन बाद, अपनी कर्मस्थली कोलकाता के लिये रवाना हुये, पहुँचते ही साझीदार व्यापारी को बोले— *''मुझे ईश्वरीय कार्यो की ओर जाना है, इसलिये हमारा हिस्सा अलग कर दीजिये।''* चूँकि दादा के आधार पर ही सारा का सारा व्यापार फैला हुआ था। इसलिये भागीदारी में अलग न होने के लिये बहुत अनुनय—विनय किया परन्तु वे ईश्वरीय इशारे प्रमाण अडिग ही रहे। नहीं मानने पर वकील द्वारा भागीदार ने जो भी हिस्सा दिया उसे ही सहज स्वीकार, परम संतुष्ट मन से घर तार किये।

अल्लिफ को अल्लाह मिला— बे को मिली झूठी बादशाही। आयी तार अलिफ की — हुआ रेल का राही ।।

परिवारजन उनकी ऐसी अलौकिकता से पूर्व परिचित थे। फिर भी ऐसी बातों का अर्थ न समझ उहापोह में फँस गये। संध्या बंदन के समय भी वे अनायास बोल पड़ते थे— रें मन मन्त्री ! मैने तुमसे बातें करनी हैं। जब मैं आत्मा ही राजा हूँ तो तू मेरी आज्ञानुसार क्यों नहीं चलता ? आदि—आदि। घर सिन्ध हैदराबाद आकर सारा समाचार बता, वे और ही भक्ति पूजा में मगन रहने लगे। दूसरे दिन घर में ही सभी सत्यनारायण जी की कथा सुनने में मगन थे। कथा के बीच से ही बाबा उठकर अपने समीप वाले कमरे में जाने लगे। उनके इस तरह कथा के बीच से उठकर पहली बार जाते हुये देख बहू विजेन्द्रा जी भी अनुसरण करती पीछे से गयीं। बाबा द्वारा कमरे में ध्यान स्थित होते ही, जैसे कि लाल स्वर्णिम प्रकाश सा सर्वत्र भर गया। उनके मुख मण्डल और नेत्रों से स्वर्णित तेज—ओज बरसने लगा। बहू बिजेन्द्रा और यशोदा माताजी यह सब देख जहाँ की वहीं खड़ी रह गयी। पुनः मुख से गम्भीर गिरा फूट निकली। *निजानन्द स्वरूपं—शिवोहम्—शिवोहम्। प्रकाश स्वरूपं—शिवोहम्—शिवोहम्।। ज्ञान स्वरूपं—शिवोहम्—शिवोहम्।।।*

चेतना खुली तो कहने लगे .... वह कौन था—वह कौन था ! एक लाइट थी, एक माइट थी।... कह रही थी तुम्हें

ऐसी सुन्दर—सतयुगी दुनियाँ बनानी है। मैं कैसे बनाऊँगा ऐसी सतयुगी दुनियाँ ? मैं कैसे बनाऊँगा ऐसी दुनियाँ ? २.....

कैसे बनाऊँगा...? बार—बार इसी धुन में खो जाते थे। बिजेन्द्रा जी और यशोदा जी के कहने पर पुनः सत्संग में गये पर तन

यहाँ रहते भी, मन उनका कहीं और ही था।

बदल गया तन मन का रंग ढंग—हुआ पूर्ण परिवर्तन... शिव ने तन में प्रवेश किया — तब हुआ अलौकिक दर्शन।।

शिव से लगन अब लागी रे — सोई आत्मा जागी रे जागी रे .....

साक्षात्कार में उस दिव्य वाणी द्वारा नई दुनियाँ बनाने का निर्देश पाते ही उनमें आमूल परिवर्तन होने लगा। खुद—खुदा ने मार्गदर्शना देते हुये उनसे सम्पूर्ण पवित्रता की पालना प्रारम्भ करवायी। साक्षात्कारों के अनुसार उन्होनें नई दुनियाँ के निर्माण हेतु ज्ञानगुणों की कलम लगाने का काम प्रारम्भ किया। काम—क्रोध ा—लोभ—मोह, अहंकार, ईर्ष्या—द्वेष, आलस्य को पूर्ण रीति से छोड़ने की उनके द्वारा शिक्षा दी जाने लगी। भगवान के सौभाग्यशाली माध्यम और सर्व आत्माओं के उद्धारकर्ता बन वे अद्‌भुत दैवी व्यक्तित्व के निर्माता बनते गये।

उनके स्वस्थ शरीर में दीप्तिमान आँखों को देख, उनके आभामय मस्तक से हरेक को निराली अनुभूतियाँ होने लगीं। श्वेत बाल—शुभ्रवस्त्र और मधुर मुस्कान के कारण वे अलौकिक व्यक्तित्व के ध ानी लगने लगे। अत्यधिक व्यस्त होते हुये भी वे कभी थके नहीं नजर आते थे। बुद्धि की तार सदा सर्वशक्तिवान से जोड़े रहने के कारण अल्पाहार और कर्मयोगी के ज्वलन्त उदाहरण बनते गये। स्वर्णिमयुग को शीघ्रातिशीघ्र उदित करने के लिये नारी वर्ग को आगे करके उन्हें सर्वगुणों की स्वरूपा बनाने की प्रेरणायें मिलने लगीं। जिसको साकार रूप देने के लिये उन्होनें अपने मकान के छोटे से कमरे में पारिवारिक सत्संग के रूप में ज्ञान देना प्रारम्भ किया। संसार रूपी जंगल को मंगल बनाने में वे दिनोंदिन सन्यस्त बुद्धि बनते गये। परिवार में रहते भी कमल समान उपराम रहने लगे। सत्संग में पहले आठ—दस फिर लोग बढ़ते ही गये। उनके ही आंगन में सैकड़ों की संख्या में इकट्‌ठा हो नये ज्ञान का लाभ लेने लगें थे। उस सत्संग में आने से विविध साक्षात्कार तो होते ही थे, सदा के लिये सवगी दु:ख अशान्ति भी मिट जाती थी। आने वालों में एक सोलह वर्षीय कन्या—राधा भी अपने संबंधियों के साथ आने लगी। अलौकिक छवि और दिव्यगुणों से वह जन्मजात अलंकृत थी। शिव बाबा ने पिताश्री द्वारा पहले ही दिन से उन्हें रूहानी पुत्री के रूप में स्वीकार कर, उनका नाम ऊँ राधे रख दिया। उसी दिन से सत्संग का नाम भी अब ऊँ मण्डली पड़ गया। वहाँ आकर
छोटे बच्चे भी ऊँ की ध्वनि करते हुये ध्यानावस्था में उच्चकोटि के साक्षात्कार करने लगे। बाबा से दृष्टि मिलते ही कोई श्रीकृष्ण, कोई विष्णु तो कोई स्वर्ग की विविध दृश्यावली देखने लगते थे।

जैसे सन् १९९८ में पांच परमाणु बमों के परीक्षणों के बाद, विदेशों द्वारा भारत पर अनेकों प्रतिबन्ध ा लगा दिये गये। कहीं उससे भी ज्यादा दादा के ही सगे संम्बन्धियों द्वारा पांचों साक्षात्कारों के बाद विविध ा विरोध—अवरोध खड़े किये जाने लगे। पर शिव बाबा का इशारा—सहारा पाते हुये सत्य की मशाल आके ही आगे बढ़ती गयी। किसी भी पुरुष ने अपनी सारी चल—अचल सम्पत्ति ऐसे ट्रस्ट को नहीं सौपी थी जिसमें महिलायें ही सदस्या हों। वहीं उसकी संचालिका व संभाल करने वाली हों। और उन्हीं के निर्देशानुसार ही सारे कार्य—व्यवहार चलते हों। ऊँ राधे को आगे करते हुये शिव बाबा ने मातागुरू का पहला अध्याय यहीं से शुरू करवा दिया। सन् १९३७ में ऊँ राधे जी को ही ट्रस्ट की अध्यक्षा बनाकर उनकी दादी प्रकाशमणि,दादी शान्तिमणि वाली पाँच की कमेटी को कहा कि आध्यात्मिक शिक्षाओं द्वारा सबको पवित्र और योगी बनाइये। ईश्वरीय योजना प्रमाण तब से ही यह उद्‌घोषणा की गई कि ये मातायें बहने ही स्वर्ग का द्वार खोलने के निमित्त बनेंगी और वे ही इस संस्थान की शिक्षिका आचार्या—प्राचार्या व संचालिका कही जायेंगी। ऊँ राधे की अध्यक्षता वाले ट्रस्ट में अपनी विशाल सम्पत्ति व सम्बन्ध समर्पितकर बाबा ट्रस्ट के आज्ञानुसार खुद को चलाने लगे। उनका पूरा लौकिक परिवार भी यज्ञ के नियम अनुसार स्वयं को समर्पितकर चलने लगा। बाद में यज्ञ की परिक्षाओं और विघ्नों को देख, उनके लौकिक पुत्र—पुत्री बाहरी दुनियाँ की तरफ जाने लगे तो उनकी लौकिकता के लिये यज्ञ से कुछ भी नहीं दिया गया था। बाबा उनकी खोज—खतर, संभाल फिर भी करते थे। जो रुके रहे वे करोडों से खेलने वाले परिवार जन, यज्ञ सेवा की भावना से सफाई करने, बर्तन धोने, सब्जी काटने, पहरा देने, गाड़ी चलाने व साफ करने जैसे सभी कार्यों में जी—जान लगाकर हाथ बंटाया करते थे। जो बहू—बेटियाँ नौकरों से ही काम लिया करती थीं अब वे खुद भगवान की नौकरी, दिल व जान, सिक व प्रेम से करने लगीं। उनके तन—मन से मध ुर धुन निकलती रहती *''तुम को पाकर बाबा ! सुख का सार पा लिया, तू मिला तो मिल गया जीवन मुक्ति अधिकार ।''* आज सारा संसार गाता — *प्रजापिता ब्रह्मा—सारा जग गुण तेरे गाये, सबके मुख पर तेरा नाम शिव की याद दिलाये .*

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com